डा.राजीव कुमार ,
इतिहास विभाग,
एच. डी. जैन कॉलेज, आरा
-----------+-----------------+-------------

"स्पेन और फ्रांस में निरंकुश राजतंत्र का विकास"

भूमिका :

यूरोप में 16वीं से 18वीं शताब्दी के बीच जिस शासन-प्रणाली ने सबसे अधिक प्रभाव डाला, वह थी निरंकुश राजतंत्र (Absolute Monarchy)। इस व्यवस्था में राजा के हाथों में शासन की लगभग सभी शक्तियाँ—विधायी, कार्यपालिका और न्यायिक—केंद्रित हो जाती थीं। राजा स्वयं को ईश्वर का प्रतिनिधि मानता था और अपने निर्णयों के लिए किसी प्रतिनिधि संस्था के प्रति उत्तरदायी नहीं होता था।
स्पेन और फ्रांस निरंकुश राजतंत्र के दो प्रमुख उदाहरण हैं, जहाँ अलग-अलग ऐतिहासिक परिस्थितियों में इस व्यवस्था का विकास हुआ।

स्पेन में निरंकुश राजतंत्र का विकास

पृष्ठभूमि :

----

1. मध्यकालीन स्पेन छोटे-छोटे राज्यों—कैस्टाइल, आरागॉन, नवारा आदि—में बँटा हुआ था। सामंती प्रभुओं और चर्च की शक्ति अत्यधिक थी। 15वीं शताब्दी के अंत तक राष्ट्रीय एकता का अभाव था।

2. फर्डिनेंड और इसाबेला (1469−1516)
स्पेन में निरंकुशता की नींव फर्डिनेंड (आरागॉन) और इसाबेला (कैस्टाइल) के विवाह से पड़ी।

मुख्य कार्य :

कैस्टाइल और आरागॉन का एकीकरण,
सामंती प्रभुओं की शक्ति को सीमित किया,
‘होली हर्मनदाद’ (Holy Brotherhood) नामक शाही पुलिस बल की स्थापना,
चर्च को राजसत्ता के अधीन लाया,
1492 में ग्रेनेडा विजय से मुस्लिम सत्ता का अंत।
इन शासकों ने “एक राजा, एक धर्म, एक कानून” की नीति अपनाई।

3. स्पेनिश इन्क्विज़िशन :

राजा ने धर्म को सत्ता का औजार बनाया।
यहूदियों और मुसलमानों पर अत्याचार किये गये।
धार्मिक एकरूपता के नाम पर राजनीतिक नियंत्रण कायम किये गये।
चर्च और राज्य का गठजोड़ स्थापित हुआ
इससे राजा की निरंकुश शक्ति और मजबूत हुई।

4. चार्ल्स पंचम (Charles V)
चार्ल्स V यूरोप का सबसे शक्तिशाली शासक था।

उपलब्धियां :

विशाल साम्राज्य: स्पेन, नीदरलैंड, जर्मनी, अमेरिका-चीन आदि देशों में स्थापित हुए।
स्थायी सेना की व्यवस्था की गई।
स्थानीय प्रतिनिधि संस्थाओं (Cortes) को कमजोर किया गया।
हालाँकि उसके शासन में विद्रोह भी हुए, जैसे कोम्यूनेरोस विद्रोह।

5. फिलिप द्वितीय (Philip II)

फिलिप II को स्पेनिश निरंकुशता का प्रतीक माना जाता है।

नीतियाँ :

शासन का अत्यधिक केंद्रीकरण,
मैड्रिड को राजधानी बनाया,
शक्तिशाली नौसेना (Spanish Armada),
चर्च और कैथोलिक धर्म का कठोर समर्थन,
लेकिन उसकी कठोर धार्मिक नीति और युद्धों ने स्पेन को आर्थिक रूप से कमजोर कर दिया।

6. निरंकुशता के परिणाम :

प्रारंभिक काल में राष्ट्रीय एकता और शक्ति,
बाद में आर्थिक संकट, कृषि उपेक्षा
धार्मिक असहिष्णुता और
साम्राज्य का पतन।

* फ्रांस में निरंकुश राजतंत्र का विकास *

-- ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :

----

1. मध्यकालीन फ्रांस सामंती विखंडन से ग्रस्त था। शक्तिशाली सामंत और चर्च राजा को चुनौती देते थे।
100 वर्षों का युद्ध (1337–1453) के बाद फ्रांस में राष्ट्रीय चेतना का उदय हुआ।

2. लुई ग्यारहवाँ (Louis XI)
फ्रांस में निरंकुशर वास्तविक संस्थापक।

कदम :

सामंती प्रभुओं को पराजित किया,
शाही सेना को मजबूत किया,
कर व्यवस्था को केंद्रीकृत किया ,
व्यापार और नगरों को संरक्षण,
उसने कहा—“राजा ही राज्य है।”

3. धर्मयुद्ध और धार्मिक संघर्ष :

16वीं शताब्दी में कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट (ह्यूगोनॉट) संघर्ष।
सेंट बार्थोलोम्यू हत्याकांड (1572),
हजारों प्रोटेस्टेंट मारे गए,
राजसत्ता की क्रूर शक्ति का प्रदर्शन।

4. हेनरी चतुर्थ (Henry IV)
----------------------------------–
उसने धार्मिक सहिष्णुता अपनाई।
नैन्ट का आदेश (Edict of Nantes, 1598),
प्रोटेस्टेंटों को धार्मिक स्वतंत्रता,
गृहयुद्ध का अंत,
राजसत्ता की स्थिरता।

5. कार्डिनल रिशल्यू (Richelieu)
---------------------------–
फ्रांस में निरंकुशता का वास्तविक शिल्पकार।

नीतियाँ :

सामंतों के किले ध्वस्त,
ह्यूगोनॉट्स की राजनीतिक शक्ति समाप्त,
‘Intendants’ के माध्यम से प्रांतों पर नियंत्रण,
चर्च को राज्य के अधीन किया।

6. लुई चौदहवाँ (Louis XIV)

फ्रांस में निरंकुश राजतंत्र की पराकाष्ठा।
प्रसिद्ध कथन – “L'État, c'est moi” (राज्य मैं हूँ)

उपलब्धियाँ :

वर्साय महल का निर्माण,
सामंतों को दरबार तक सीमित किया,
शक्तिशाली स्थायी सेना,
केंद्रीकृत प्रशासन,
कला, संस्कृति और व्यापार को संरक्षण।

7. निरंकुशता के दुष्परिणाम :

अत्यधिक कर,
किसानों की दुर्दशा,
राजकोषीय संकट,
अंततः 1789 की फ्रांसीसी क्रांति।

निष्कर्ष:

स्पेन और फ्रांस दोनों में निरंकुश राजतंत्र ने राष्ट्रीय एकता, स्थायित्व और केंद्रीय सत्ता को मजबूत किया। परंतु लंबे समय में यह व्यवस्था जनता के हितों की उपेक्षा, आर्थिक शोषण और राजनीतिक असंतोष का कारण बनी।
जहाँ स्पेन धार्मिक कट्टरता के कारण शीघ्र पतन की ओर बढ़ा, वहीं फ्रांस में निरंकुशता अपनी चरम सीमा तक पहुँचकर फ्रांसीसी क्रांति के माध्यम से समाप्त हुई। इस प्रकार, निरंकुश राजतंत्र आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था के उदय की पृष्ठभूमि भी बना।